

International Journal of Sanskrit Research

अनंता



ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(5): 316-318
 © 2025 IJSR
www.anantajournal.com
 Received: 07-08-2025
 Accepted: 10-09-2025

अनमोल अग्निहोत्री
 शोधच्छात्र, संस्कृतविभाग, नेहरू मेरियल
 शिव नारायण दास स्नातकोत्तर
 महाविद्यालय, सम्बद्ध-महात्मा ज्योतिबा
 फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली,
 उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल
 एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृतविभाग, नेहरू
 मेरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर
 महाविद्यालय, सम्बद्ध-महात्मा ज्योतिबा
 फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली,
 उत्तर प्रदेश, भारत

श्रीमद्भागवत-महापुराण के गोपीगीत का वैशिष्ट्य: एक विवेचन

अनमोल अग्निहोत्री, बैकुण्ठ नाथ शुक्ल

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i5e.2835>

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में गोपीगीत के विभिन्न पक्षों में से केवल भक्तिशास्त्रीय पक्ष केन्द्रित रहकर उसके वैशिष्ट्य पर विचार किया है। इस शोधपत्र में भक्तिशास्त्र के आलोक में गोपीगीत में निहित भक्तिशास्त्रीय तत्त्वों का विवेचन किया गया है। इसके साथ ही यह भी स्थापित करने का विनम्र प्रयास किया गया है कि गोपीगीत में भक्तिशास्त्र का सम्पूर्ण साध्य-साधनतत्त्व निरूपित हुआ है तथा प्रमुख वैष्णव-सिद्धान्तों के बीज भी इसमें विद्यमान हैं। वैष्णवदर्शन के आधारभूत सिद्धान्त अवतारवाद का प्रतिपादन भी गोपीगीत में अत्यन्त दृढ़ता के साथ किया गया है। भक्तिशास्त्र एवं वैष्णवदर्शन का सार गोपीगीत में विद्यमान है, यही गोपीगीत का एक महान् वैशिष्ट्य है।

कूटशब्द: गोपीगीत, श्रीमद्भागवत, वैष्णव, भक्तिसिद्धान्त, शरणागति, साध्य, साधन

प्रस्तावना

गोपीगीत श्रीमद्भागवत-महापुराण रूपी किरीट में जड़ा हुआ एक समुज्ज्वल रत्न है। गोपियों के द्वारा गेय पाँच प्रेमगीतों में यह अन्यतम है। श्रीमद्भागवत-महापुराण के दशमस्कन्ध में विद्यमान ३१वाँ अध्याय ही गोपीगीत के नाम से विश्वविद्यात है। श्रीकृष्ण जब रासलीला के मध्य अन्तर्धान हो गये तब गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में अत्यन्त व्याकुल हो गयीं। वे उनका चारों ओर अन्वेषण करने लगीं परन्तु श्रीकृष्ण को नहीं ढूँढ पायीं। वे उन्हें खोजते हुए यमुना तट पर पहुँच गयीं। जब गोपियों को यह अनुभव होने लगा कि वे किसी भी प्रकार से स्वप्रयासों द्वारा श्रीकृष्ण को प्राप्त नहीं कर सकतीं तब उन्होंने श्रीकृष्ण को सर्वात्म-समर्पण करते हुए उन्हीं से दर्शन देने की याचना की। यह याचना गोपियों के मुख से गीत रूप में प्रस्फुटित हुई अतः इसी कारण यह गोपीगीत के नाम से विश्व में प्रसिद्ध है।

गोपीगीत का वैशिष्ट्य

गोपीगीत में भागवतकार भगवान् वेदव्यास ने गोपियों के आचरण एवं उनके वचनों के माध्यम से समस्त भक्तिसिद्धान्त को सूत्र रूप में प्रकाशित किया है। भक्तिसिद्धान्त के साध्य-साधन-तत्त्व का निरूपण गोपियों ने अपने गीत में किया है। समस्त वैष्णवसम्प्रदाय भक्तिसिद्धान्त को ही स्वीकार करते हैं। इसी कारण वैष्णवसमाज में गोपीगीत का विशेष आदर व सम्मान है। गोपीगीत में प्रतिपादित भक्तिसिद्धान्त के तत्त्वों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- १- साध्यतत्त्व तथा २- साधनतत्त्व। अब हम गोपीगीत में वर्णित साध्य-साधनतत्त्व का विस्तार से विवेचन करेंगे।

साध्य-तत्त्व

गोपीगीत में साध्यतत्त्व के मुख्य स्तरसे चार पक्षों का वर्णन हुआ है। वे चारों पक्ष निम्नप्रकार हैं-

१. **गोपीगीत का साध्यतत्त्व:** गोपीगीत में साध्यतत्त्व के रूप में एकमात्र श्रीकृष्ण को ही स्वीकार किया गया है। सम्पूर्ण गोपीगीत श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिये की जाने वाली एक करुण प्रार्थना है। गोपियों के लिये श्रीकृष्ण ही परम प्राप्तव्य हैं एवं वे ही परमतत्त्व भी हैं। यही कारण है कि गोपियों को आदर्श मानकर बल्लभ एवं चैतन्य जैसे वैष्णवाचार्यों एवं उनके द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदायों ने श्रीकृष्ण को ही अपने इष्टदेव के रूप में स्वीकार किया है।

२. **श्रीकृष्ण(साध्य) का स्वरूप:** गोपियाँ श्रीकृष्ण के स्वरूप का निरूपण करते हुए कहती हैं कि, 'हे सखे! आप केवल यशोदानन्दन ही नहीं हैं अपितु समस्त प्राणियों की बुद्धि के साक्षी हैं- न खलु गोपिकानन्दनो भवानशिखलदेहिनामन्तरात्मदृक्'(१)। प्रस्तुत पड़क्ति के माध्यम से श्रीकृष्ण का स्वरूप भलिभाँति प्रकट हो जाता है। श्रीकृष्ण बुद्धि के साक्षी हैं। बुद्धि का साक्षी केवल आत्मा ही हो सकता है, उसमें भी जीवात्मा तो केवल व्यष्टि-बुद्धि का ही साक्षी होता है परन्तु गोपियों ने तो श्रीकृष्ण को समस्त देहधारियों की बुद्धि का साक्षी कहा है। इसका तात्पर्य यह है कि श्रीकृष्ण समष्टि-बुद्धि के साक्षी हैं। समष्टि-बुद्धि का

Corresponding Author:

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल
 एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृतविभाग, नेहरू
 मेरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर
 महाविद्यालय, सम्बद्ध-महात्मा ज्योतिबा
 फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली,
 उत्तर प्रदेश, भारत

साक्षी केवल ईश्वर हुआ करता है अतः इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण साक्षात् परमेश्वर हैं।

३. श्रीकृष्ण(साध्य) का स्वभावः श्रीकृष्ण ही परमसाध्य हैं। गोपीगीत में उनके स्वभाव का सुन्दर निरूपण हुआ है। गोपीगीत में श्रीकृष्ण को शरणागतवत्सल के रूप में चित्रित किया गया है। ब्रह्माजी की प्रार्थना से उन्होंने भूमण्डल पर अवतार ग्रहण किया- विखनसार्थितो विश्वगुम्ये सख उदेविवान् सात्वतो कुले^(३)। अपनी शरण में आये हुए ब्रजवासियों की मृत्यु से, अधासुर दैत्य से, इन्द्र द्वारा की गयी वर्षा से एवं अन्य अनेक संकटों से श्रीकृष्ण ने बार-बार रक्षा की है- विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्विद्युतानलात् । वृषमयात्मजाद्विश्वो भयादृष्टभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥^(३)। गोपियों ने श्रीकृष्ण को अभ्य प्रदान करने वाला, सम्पूर्ण मनःकामनाओं को पूर्ण करने वाला कहा है- विरचिताभयं वृष्णिर्धुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्^(४)। श्रीकृष्ण शरणापन्न प्राणियों के पापों का नाश करने वाले तथा परम दयालु हैं- प्रणतदेहिनां पापकर्षनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्^(५)। इस प्रकार श्रीकृष्ण के स्वभाव का निरूपण गोपीगीत में किया गया है।

४. अवतारतत्त्वः अवतारवाद का सिद्धान्त भक्तिसिद्धान्त के आधारभूत सिद्धान्तों में से एक है। इस सिद्धान्त के अनुसार जब-जब धर्म की हानि होती है एवं अर्धम अभ्युदय को प्राप्त होता है तब-तब परमात्मा अज, अव्ययत्मा, समस्त भूतों के ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से इस जगत् में स्वयं अवतीर्ण होते हैं। वे स्वयं अवतार ग्रहण करके दुष्टों का विनाश करते हैं तथा साधुपुरुषों की रक्षा करके सृष्टि में धर्म की स्थापना करते हैं। इसी सिद्धान्त का उद्घोष भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं श्रीमद्भगवद्गीता में करते हैं^(६)।

गोपीगीत में भी अवतारवाद का स्पष्ट निरूपण हमें प्राप्त होता है। गोपियाँ श्रीकृष्ण को साक्षात् परब्रह्म के अवतार के रूप में जानती हैं। वे कहती हैं कि, ‘हे अड़गा! आपका अवतार सभी ब्रजवासी जनों का दुःख दूर करने के लिये और संसार के कल्याण के लिये हुआ है- ब्रजवनोंकां व्यक्तिरङ्गा ते वृजिनहन्त्यतं विश्वमङ्गलम्^(७)। आपके इस ब्रजक्षेत्र में जन्म(अवतार) लेने का कारण इस ब्रजभूमि का गौरव वैकुण्ठ से भी अधिक हो गया है- जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि^(८)।

साधन-तत्त्व

श्रीमद्भागवत-महापुराण भक्तिदर्शन का सर्वोच्च तथा सर्वमान्य ग्रन्थरत्न है। श्रीमद्भागवत में श्रवण, कीर्तन एवं स्मरण को ईश्वर की प्राप्ति का प्रमुख साधन माना गया है। यद्यपि भक्तिदर्शन में साधनों के रूप में नवधा-भक्ति अधिक प्रसिद्ध है तथापि नवधा-भक्ति में भी इन्हीं तीन साधनों की प्रमुखता है। श्रीमद्भागवत के द्वितीयस्कन्ध में ही राजा परीक्षित के प्रश्न करने पर श्रीशुकदेव जी कहते हैं कि, ‘यदि अभयपद प्राप्त करने की इच्छा हो तो व्यक्ति को चाहिये कि वह सर्वात्मा भगवान् श्रीहरि की कथा का नित्य श्रवण करे, उनके गुणों का कीर्तन करे तथा उनका स्मरण करता रहे- तत्समाद्वारत सर्वात्मा भगवानीश्वरो हरिः। श्रोतव्यः कीर्तिर्व्यश्च स्मर्तव्यश्चेच्छताभयम्^(९)।

गोपीगीत में भी इन्हीं तीन साधनों का वर्णन प्रमुख रूप से आया है, यद्यपि अन्य साधनों का संकेत भी उसमें विद्यमान है। गोपीगीत में एकाधिक स्थानों पर इन तीन साधनों का वर्णन प्राप्त होने से ऐसा प्रतीत होता है कि गोपियों ने श्रवण, कीर्तन एवं स्मरण पर विशेष बल दिया है। इन तीन साधनों के अतिरिक्त जिस साधन पर सबसे अधिक बल दिया गया है, वह है- शरणागति।

अब हम श्रवण, कीर्तन, स्मरण तथा शरणागति का जो वर्णन गोपीगीत में आया है उस पर विचार करेंगे।

१. श्रवण

गोपियों ने कृष्णकथा की महिमा का अद्भुत निरूपण किया है। गोपियों के अनुसार कृष्णकथा साक्षात् अमृत है, क्योंकि वह सन्तास प्राणियों को जीवन देती है। कवि अर्थात् ब्रह्माज्ञानियों के द्वारा भी इसकी प्रशंसा की जाती है। यह कृष्णकथा सब पापों का हरण करने वाली है, श्रवणमात्र से मङ्गलकारीणी और अत्यन्त शान्त है, ऐसे कृष्णकथामृत को विस्तार के साथ जो पुरुष गाते हैं, वे बड़े पुण्यात्मा हैं- तब कथामृतं

तपसीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्। श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणिते ते भुरिदा जनाः॥^(१०)।

श्रीकृष्ण कथा के माहात्म्य के विषय में जो कुछ गोपियों ने कहा है, वह स्वयं में परिपूर्ण है। हरिकथा की महिमा का एक ही श्लोक में ऐसा सर्वाङ्गपूर्ण प्रकाशन अन्यत्र दुर्लभ है। यही कारण है कि समस्त वैष्णव तथा भक्तिमार्गी आचार्यों ने हरिकथा को इतना महत्त्व प्रदान किया है।

२. कीर्तन

सम्पूर्ण गोपीगीत ही स्वयं में कीर्तन-भक्ति का उदाहरण है। कीर्तन के द्वारा भक्त भगवान् के गुणों को गाकर उन्हें प्रसन्न करता है तथा उनसे दर्शन अथवा साक्षात्कार प्रदान करने की प्रार्थना करता है। गोपीगीत में भी हम इसी भाव का दर्शन करते हैं। सम्पूर्ण गोपीगीत में गोपियों ने श्रीकृष्ण के अनुपम गुणों का गान किया है तथा प्रत्येक श्लोक में अपने दैत्य को प्रकट करते हुए उनसे दर्शन तथा साक्षात्कार प्रदान करने की प्रार्थना की है- दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्नते^(११)।

३. स्मरण

स्मरण-भक्ति का भी गोपीगीत में अनेक स्थलों पर उल्लेख हुआ है। गोपीगीत में स्मरण-भक्ति का निर्देश ‘ध्यान’ के द्वारा किया है। श्रीकृष्ण के ध्यान की महिमा का वर्णन करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि, ‘हे प्रियतम! तुम्हारे सुन्दर हास्य का ध्यानमात्र ही परम मङ्गलकारी है-प्रहसितं प्रियं प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्’^(१२)। गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण के चरणों के ध्यानमात्र से समस्त आपत्तियाँ दूर हो जाती हैं। प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि। चरणपङ्कजं शन्तम् च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिनाः॥^(१३)। इस प्रकार गोपियों ने श्रीकृष्ण के स्मरण की महिमा का ख्यापन किया है।

४. शरणागति

भक्तिमार्ग में शरणागति का सबसे अधिक महत्त्व है। विना शरणागत हुए भगवान् के प्रति की गयी कोई भी उपासना सफलता को प्राप्त नहीं होती है तदिपरीत यदि कोई व्यक्ति उपासना को नहीं जानता है परन्तु उसकी ईश्वर के प्रति पूर्ण शरणागति है तो वह ईश्वर को निश्चय ही प्राप्त कर लेगा। भगवान् राम ने यह उद्घोष किया है कि, ‘यदि कोई केवल एक बार पूर्ण शरणागत होकर यह कह दे कि मैं आपका हूँ तो मैं तत्काल ही उसे समस्त भूतों से अभय प्रदान कर देता हूँ, यह मेरा ब्रत है- सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याच्चतो। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाय्येत् ब्रतं मम॥^(१४)।

गोपियों ने भी शरणागति के माहात्म्य का प्रतिपादन किया है। गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण शरणागत जनों के पापों को नष्ट कर देते हैं- प्रणतदेहिनां पापकर्षनेः॥^(१५)। श्रीकृष्ण के शरणागत हुआ जीव अभयपद को प्राप्त करता है- विरचिताभयं वृष्णिर्धुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्^(१६)। गोपियों ने स्वयं को बार-बार श्रीकृष्ण की दासी तथा किङ्करी शब्द से अभिहित किया है- सुरतानाथ तेऽशुल्कदासिका^(१७), भज सखे भवत्किङ्करीः स्म जलरुहानं चारु दर्शय^(१८)। इन सभी उक्तियों के माध्यम से गोपियों ने स्वयं शरणागत भक्त का आदर्श प्रस्तुत किया है। इसके द्वारा यह ध्वनित होता है कि कि जिस प्रकार श्रीकृष्ण गोपियों को निश्चित रूप से प्राप्त हुए उसी प्रकार वे अपने हर शरणागत भक्त को भी अनिवार्य रूप से प्राप्त होते हैं।

उपसंहार

इस प्रकार हम देखते हैं कि गोपीगीत में सम्पूर्ण भक्तिसिद्धान्त का निरूपण सूत्र रूप में किया गया है। समस्त वैष्णवाचार्यों ने गोपीगीत द्वारा ख्यापित साध्य-साधन-तत्त्व को यथारूप स्वीकार किया है। गोपीगीत में अवतारवाद का प्रबलतापूर्वक समर्थन किया गया है जोकि श्रीमद्भगवद्गीता के साथ समरूपता रखता है। गोपीगीत में वे सभी तत्त्व बीज रूप में विद्यमान हैं जिनके द्वारा एक दर्शन प्रस्थान को विकसित किया जा सकता है। इसमें साध्य का निरूपण है, उसकी प्राप्ति के साधन का निरूपण है तथा उसके साथ ही साधन के द्वारा साध्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया का भी वर्णन सूक्ष्म रूप में किया गया है। गोपीगीत पर काव्यशास्त्रीय, नाट्यशास्त्रीय, व्याकरणशास्त्रीय, छन्दशास्त्रीय आदि अनेक पक्षों से विचार किया जा सकता है परन्तु प्रस्तुत शोधपत्र में भक्तिदर्शन की दृष्टि से ही विवेचन किया गया है। यह गोपीगीत का एक महान्

वैशिष्ट्य है कि सम्पूर्ण भक्तिदर्शन गोपियों द्वारा गाये गये गीत में समाहित हो गया है।

उद्धरणसूची

1. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।४)।
2. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।४)।
3. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।३)।
4. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।५)।
5. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।७)।
6. श्रीमद्भगवद्गीता (४।६-८)।
7. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।१८)।
8. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।१)।
9. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (२।१।५)।
10. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।९)।
11. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।१)।
12. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।१०)।
13. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।१३)।
14. श्रीमद्वालमीकीयरामायणम् (६।१।८।३३)।
15. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।७)।
16. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।५)।
17. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।२)।
18. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (१०।३१।६)।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. श्रीमद्भगवतमहापुराणम् (स्थूलाक्षरं मूलमात्रम्)- गीताप्रेस, गोरखपुरा
2. श्रीमद्भगवद्गीता- गीताप्रेस, गोरखपुरा
3. श्रीमद्वालमीकीयरामायणम्- गीताप्रेस, गोरखपुरा